आर. एन. आई. नं. : RJHIN16694

पोस्टल रजि. नं.

पशु पालन नए आयाम

परिकल्पना एवं निर्देशन - प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

वर्ष : 2 अंक : 3 बीकानेर, नवम्बर, 2014 मूल्य : ₹ 2.00

सु-स्वागतम्

श्री ओटा राम देवासी

राज्य मंत्री

देवस्थान एवं गोपालन विभाग

राजस्थान सरकार

श्री राजेश्वर सिंह

प्रमुख शासन सचिव

पशुपालन, मत्स्य एवं गोपालन विभाग तथा

प्रबंध निदेशक, आर.सी.डी.एफ., जयपुर

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

कुलपति की कलम से...

''ऊंटों व बड़े पशुओं की शल्य चिकित्सा में नए क्षितिज'' विषय पर अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनार में कुलपति के उद्‌बोधन के कुछ अंश

देश के प्रत्येक पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय और पशुचिकित्सा संस्थानों से प्रतिनिधि इस सेमीनार में पधारे हैं। राजस्थान पशुधन उत्पादन में समृद्ध है तथा यहां अर्थव्यवस्था में इसकी अहम भूमिका है । एक अनुमान के अनुसार राज्य के 80 प्रतिशत घरों में पशुपालन एक प्रमुख कारक के रूप में मौजूद है। जहां देश में पाई जाने वाली पशुधन की श्रेष्ठ नस्लें मौजूद हैं। इसमें ऊंटों सहित घोड़े, गौवंश, भेड़, बकरियां शामिल हैं। राज्य की जी.डी.पी. में पशुपालन सेक्टर का 10.27 फीसदी योगदान है। राजस्थान में पशुपालन का जी.डी.पी. में योगदान कुल कृषि (पशुपालन को सम्मिलित करते हुए) के जी.डी.पी. से 50 प्रतिशत से अधिक है तथा अन्य राज्यों जैसे कि गुजरात, हरियाणा, पंजाब, तमिलनाडु आदि प्रांतों से भी ज्यादा है । यह राज्य की जी.डी.पी. का लगभग एक तिहाई अथवा अधिकतम 40 फीसदी तक है। राजस्थान सरकार ने ऊंटों को राज्य पशु का दर्जा घोषित किया है। आपकी जानकारी के लिए यह भी बताना चाहूंगा कि विश्वविद्यालय के आधुनिक तकनीक से सुसज्जित क्लिनिकल कॉम्प्लेक्स के द्वारा राज्य के पशुपालकों और पशुधन संपदा को निःशुल्क सेवाएँ प्रदान की जा रही है। यहां पर चौबीसों घंटे पशुचिकित्सा सुविधाएँ मुहैय्या करवाई जा रही हैं। प्रति वर्ष पूरे राज्य से 40 से 50 हजार विभिन्न प्रजातियों के बीमार पशु उपचार के लिए यहां लाए जा रहे हैं। आए दिन बड़ी संख्या में बीमार ऊंट भी यहां देखे जा सकते हैं अतः इसे "केमल क्लिनिक्स" के रूप में भी जाना जाता है। पशुओं के आपदा प्रबंधन का केन्द्र भी इस विभाग में स्थापित करने वाला यह देश का पहला विश्व विद्यालय है, जहां पशुओं में आपदा से प्रबंधन की नई तकनीकी का विकास किया जा रहा है। यहां रोग निदान की सुविधा में 500 एम.ए.एस. एक्स–रे, डिजिटल एक्स–रे, अल्ट्रा सोनोग्राफी, कलर डॉप्लर मशीन शामिल हैं। यह विश्वविद्यालय राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिक सम्मेलनों का आयोजन करने के लिए सदैव तत्पर और सक्रिय रहा है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने अभी दो दिन पहले ही "गोल्डन घास सेवण" की हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से पौध तैयार करने में सफलता हासिल की है। ऐसा करने वाला यह देश का पहला विश्वविद्यालय है। विश्व विद्यालय ने हेरिटेज जीन बैंक की संकल्पना के अंतर्गत राज्य की पांच श्रेष्ठ गौवंश की

शेष पेज 5 पर...

नई दिल्ली में आयोजित नॉलेज सिंपोजियम में पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत को सम्मानित

अपने विश्वविद्यालय को जानें

पशु चिकित्सा औषध विभाग

1956 में स्थापित औषध विभाग ने पालतु पशुओं की सभी प्रजातियों के साथ ही वन्यजीवों, जुगाली करने वाले पशुओं, ऊंटों और श्वानों के रोगों के उपचार में विशिष्ट उपलब्धियां अर्जित करके अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई है। पशुओं में ''विधिक चिकित्सा'' विषय को स्नातकोत्तर और वाचस्पति पाठ्यक्रमों में शामिल करने वाला यह अग्रणी विभाग है। ''वेटरनरी ज्यूरिसप्रुडेन्स'' नामक पाठ्य पुस्तक संकाय द्वारा तैयार की गई जिसे देश के सभी पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान महाविद्यालयों के अध्यापन कार्य में शामिल किया गया है। विभाग द्वारा वेटरनरी प्रेक्टिसनर और जर्नल ऑफ केनाइन डवलपमेन्ट एण्ड रिसर्च के साथ ही 700 से भी अधिक शोधपत्र राष्ट्रीय–अर्न्तराष्ट्रीय जर्नल्स में प्रकाशित हुए हैं। ''कॉमन पाइजनिंग इन एनिमल्स'' बुलेटिन का प्रकाशन विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशालय के लिए किया जा रहा है। विभाग द्वारा अब तक 1968 में स्थापित स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में 93 और 1996 से डॉक्टरेट की 8 उपाधियां प्रदान की गई है। विभाग की क्लिनिक इण्डोर वार्ड औसतन 12–18 हजार पशुओं का उपचार प्रति वर्ष किया जा रहा है। श्वानों का इण्डोर वार्ड और रेबीज पृथक्कीय वार्ड की सुविधा भी उपलब्ध है। पशुओं के लिए देश की पहली ''फोरेन्सिक साईंस प्रयोगशाला'' यहां है जिसमें पशुओं की प्रजाति, उत्तकों, पौधों के विषैले और कीटनाशकों के प्रभाव का अध्ययन किया जाता है। पशुओं के उपचार के लिए हेमेटोलॉजी सहित सभी अंग–प्रत्यंगों की आंतरिक जांच की प्रयोगशाला सुविधा भी है। यहां के चिकित्सा वैज्ञानिक जुगाली वाले पशुओं में पाचन सबंधी विकारों, मेसटाइटिस, उपापचयी क्रियाओं, पोषक तत्वों की स्थिति, श्वानों में रोगोपचार कीटनाशकों, धातु के विषैले प्रभावों को लेकर रोग निदान और उपचार पर अनुसंधान कार्य कर रहे हैं। विभाग द्वारा बड़े औषधिय निर्माण संस्थानों के साथ मिलकर क्लिनिकल ट्रायल, राज्य सरकार के क्षेत्रीय पशुचिकित्सकों, चिड़ियाघर पर्यवेक्षकों, विश्वविद्यालय शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों का सफलता पूर्वक आयोजन किया जा रहा है। विभाग राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केन्द्र, केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, सीमा सुरक्षा बल, एन. सी.सी., पुलिस विभाग के साथ मिलकर पशुओं के उत्तम स्वास्थ्य, चिकित्सा और रोगों के उपचार के कार्यों में लगा हुआ है। विभाग की पंजीकृत संस्था '' केनाइल वेलफेयर सोसायटी'' के माध्यम से पालतु श्वानों के कल्याण और लोगों में जागरूकता संबधी कार्यों को भी बखूबी अंजाम दे रही है। विश्व जुनोटिक और विश्व रेबीज दिवस पर भी प्रति वर्ष कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

शरीर में खनिज तत्वों की कमी के लक्षण और उनका उपचार

राजस्थान का बड़ा भू–भाग मरूस्थल है और तीन चौथाई से अधिक आबादी गांवों में रहती है। जीविका के लिए कृषि के साथ मुख्यतः पशुपालन पर निर्भर है। पशुधन को उचित रखरखाव और सन्तुलित आहार देकर ही अच्छी स्थिति में रखा जाकर उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। सन्तुलित आहार में सभी प्रकार के पौष्टिक तत्व जैसे शर्करा, नत्रजन, वसा, खनिज तत्व और विटामिन्स उचित मात्रा में तथा निश्चित अनुपात में होते हैं। सन्तुलित आहार खिलाने से पशु स्वस्थ तो रहते ही हैं, साथ ही उत्पादन जैसे दूध, ऊन, मांस आदि भी बढ़ता है। जब शुष्क पदार्थ को सावधानी पूर्वक जलाया जाता है तो कार्बनिक पदार्थ पूर्णरूप से जल जाता है और भष्म शेष रहती है जिसे ''खनिज पदार्थ''कहते हैं। खनिज तत्वों का उपयोग शरीर में मुख्य रूप से इन कार्यों में होता है–

- शरीर की कंकाल संरचना हड्डियों द्वारा होती है तथा हड्डियों एवं दांतों में मजबूती खनिज तत्वों के कारण ही होती है।
- कई खनिज तत्व एन्जाइम निकायों के अंग या सक्रिय कारक के रूप में कार्य करते हैं।
- शरीर के मुलायम तन्तुओं और द्रवों में भी खनिज तत्व होते हैं, न्यूक्लियो–प्रोटीन जिसके द्वारा पैतृक गुण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में जाते हैं, की रचना के लिए फास्फोरस आवश्यक है।
- कुछ खनिज तत्व मांसपेशियों की अनुक्रिया एवं तानता को बढ़ाते या घटाते हैं।
- खनिज तत्व शरीर में तन्त्रिकाओं की उत्तेज्यता को भी बढ़ाने या घटाने में सहायता करते हैं।
- शरीर द्रवों में खनिज तत्व घुले होते हैं। ये तत्व ही मुख्यतः उचित रसाकर्षण दाब और अम्ल–क्षार सन्तुलन बनाने में सहायता करते हैं।
- रूधिर कणिकाओं में मुख्य रूप से पाये जाने वाले हेमोग्लोबिन पिग्मेन्ट में लोहा पाया जाता है।

खनिज तत्वों को मुख्यतः दो भागों में बांटा गया है, जिसमें पहला भाग उन तत्वों का है जिनकी आवश्यकता शरीर में ज्यादा मात्रा में रहती है, इनको वृहत तत्व कहते हैं। इसमें कैल्शियम, फास्फोरस, मैग्नीशियम, सोडियम, पोटेशियम, क्लोरीन तथा सल्फर है, दूसरा भाग उन तत्वों का है जिनकी आवश्यकता बहुत ही कम मात्रा में होती है एवं इनको विरल तत्व कहते हैं, इनमें मुख्य रूप से लोहा, जिंक, तांबा, मैगनीज, कोबाल्ट आयोडीन, मोलिबिडीनम, फ्लोरीन, सैलेनियम तथा क्रोमियम है। पशु आहार में यदि खनिज तत्वों की कमी होगी तो इससे आहार के अन्य पदार्थ जैसे शर्करा, प्रोटीन, वसा आदि का सही तरह से उपयोग नहीं हो सकेगा। पशुओं में कमजोरी आ जाती है तथा अनेक प्रकार की बीमारियां हो सकती हैं अगर यही तत्व आवश्यकता से अधिक मात्रा में होते हैं तो भी स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक है तथा इससे भी पशुओं में बीमारी अथवा मृत्यु तक हो सकती है।

पशु आहार में खनिज तत्वों के अभाव में होने वाली बीमारियां:

विरल तत्व

लोहा :– शरीर में कुल लोहे का लगभग 90 प्रतिशत भाग प्रोटीन के साथ पाया जाता है। इनमें मुख्यतः हेमोग्लोबिन जो कि रक्त का क्रोमाप्रोटीन है। इसमें ऑक्सीजन की परिवहन क्षमता होती है, रक्त सिरम में यह तत्व ''ट्रान्सफैरीन'' के नाम से पाया जाता है जो कि लोहे को शरीर में एक भाग से दूसरे भाग तक ले जाने में सहायता करता है। इस तत्व की कमी से मुख्यतः खून में हेमोग्लोबिन की कमी हो जाती है तथा एनिमिया नामक रोग हो जाता है।

आयोडीनः– पशु के शरीर में इस तत्व की मात्रा 0.00004 प्रतिशत से भी कम होती है और इतनी सूक्ष्म मात्रा भी अगर पशुओं को खाद्य पदार्थो द्वारा प्रदान नहीं की जाती है तो इसके घातक परिणाम हो सकते हैं और विभिन्न बीमारियां भी हो सकती है। इस तत्व का मुख्य भाग थाइराइड नामक ग्रन्थि ''थायरोक्सीन'' नामक हारमोन के घटक के रूप में उपस्थित होता है। इस तत्व की कमी से ''गौइटर'' नामक रोग हो जाता है।

तांबाः– यह तत्व पशुओं में सामान्य उत्पादन और प्रजनन के लिए आवश्यक है। खून में हेमोग्लोबिन बनाने के लिए लोहे के साथ इस तत्व का होना भी आवश्यक है। इस तत्व की कमी से, खून की कमी हो जाती है जिसे ''हाइपोक्रोमिक मैक्रोसाइटिक एनिमिया'' कहते हैं।

कोबाल्टः– इस तत्व की कमी से गौ पशु एवं भेड़ों में अच्छे चारागाह और चारा उपलब्ध होने के पश्चात भी पशु कमजोर और क्षीण होने लग जाते हैं तथा अन्त में रक्त क्षीण होकर मृत्यु तक हो सकती है।

मेंगनीजः– इस तत्व की मात्रा शरीर में काफी कम होती है। लगभग सभी उत्तकों में यह तत्व विद्यमान होता है। सबसे अधिक सान्द्रता अस्थि, गुर्दे, जिगर, अग्नाशय एवं पिट्टयूटरी में रहती है। इस तत्व की कमी से बढ़वार में रूकावट, कंकाल में विषमता, नवजात पशुओं में गति–विश्राम और जननीय अक्षम हो जाता है। भूख कम लगती है और शरीर में भोज्य उपयोग की क्षमता में कमी आ जाती है।

जिंकः– मेंगनीज की तरह यह तत्व भी शरीर में बहुत ही कम मात्रा में पाया जाता है। शरीर में इस तत्व का अधिकांश भाग हड्डियों, बाह्य ऊतकों एवं रक्त में पाया जाता है। इस तत्व की कमी से एलोपेशिया व पेराकैरेटोसिस बीमारी होती है।

फ्लोरीनः– यह तत्व दांत तथा अस्थि के क्षय रोकने में सहायता करता है। यह साधारणतः खाद्य पदार्थ की अपेक्षा पीने के पानी द्वारा शरीर में प्रवेश करता है। इस तत्व का 1 पी.पी.एम. तक तो दांत व हड्डियों के विकास के लिए लाभदायक है, परन्तु यदि इससे अधिक मात्रा 2 पी.पी.एम. होती है तो यह शरीर के लिए हानिकारक भी हो सकता है। इस तत्व की अधिकता से हड्डियों का क्षय होता है एवं दांतों का रोग हो जाता है जिसे ''फ्लोरोसिस'' कहते हैं।

मोलिबिडिनम एवं सैलेनियमः– आहार एवं पशु शरीर में इन तत्वों की मात्रा बहुत ही कम पायी जाती है। ये तत्व विभिन्न एंजाइमों के घटक के रूप में कार्य करते हैं जैसे कि जैंथीन आक्सीडेज, नाइट्रेट रिडक्टेज आदि। इनके ज्यादा खाने से दस्त लग जाते हैं, वजन कम हो जाता है एवं जनन क्रिया पर विपरीत असर पडता है जिसमें मुख्यतः अण्डकोष में शुक्राणु का बनना कम अथवा बिल्कुल बंद हो जाता है। सैलेनियम की कमी से पशुओं में सफेद पेशी बीमारी एवं मस्तिष्क मृदुता नामक रोग हो सकता है। इसकी मात्रा ज्यादा होने पर अंधापन, लड़खड़ाना व डेग्नेला नामक रोग अथवा पशु की मृत्यु तक हो सकती है।

खनिज तत्वों की कमी का निवारणः– पशुओं को ऐसे तत्वों और उनकी कमी से होने

(शेष पेज 4 पर)

बदलते मौसम में पशु- पक्षियों की देखभाल कैसे करें

अक्टूबर माह के बाद मौसम में सर्दी का प्रभाव शुरू हो जाता है और सामान्यता दिन तथा रात के तापमान में काफी अन्तर रहने लगता है। कई बार रात के समय तापमान में अचानक गिरावट आती है जिसकी वजह से छोटे–बड़े सभी प्रकार के पशु एवं मुर्गे–मुर्गियों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और रोग प्रतिरोधक क्षमता की कमी से पशु विभिन्न संक्रमणों से भी प्रभावित हो सकता है।

सर्दी के समय गाय–भैंस, ऊंट, घोड़े, भेड़–बकरी आदि सामान्यता न्यूमोनिया से प्रभावित हो जाते है एवं मुर्गियों में भी विभिन्न प्रकार के श्वसन संबधी संक्रमण होने की बहुत ज्यादा सम्भावनाएँ बढ़ जाती हैं। इसके अतिरिक्त सर्दियां शुरू होने के साथ ही वातावरण में नमी भी बढ़ जाती है जिसके कारण पशु गलघोंटू से भी काफी प्रभावित होते हैं। इसी प्रकार इस मौसम में ऊंटों व भेड़–बकरियों में माता रोग भी काफी प्रभावित करता है। पशुपालकों को बदलते मौसम में अपने पालतू पशु–पक्षियों का विशेश ध्यान रखना चाहिए। अपने पशुओं को बाड़े में किसी छायादार स्थान पर रखें व कम स्थान पर ज्यादा पशु ना रखें। रात के समय ठंडी हवाओं से बचाव के लिए पल्ली इत्यादि का प्रयोग करें। पशुओं को इस मौसम में बिना आवश्यकता नहीं नहलाएं। मुर्गी फार्म में भी विशेषतया चूजों को रात्री में ठण्ड से बचने के लिए पुख्ता इंतजाम करें। पशु के सुस्त होने, तेज बुखार होने, उत्पादन में कमी होने या चारा पानी बंद होने की स्थिति में पशु संक्रमित हो सकता है। इन लक्षणों के आने पर ऐसे पशु को तुरंत प्रभाव से अन्य स्वस्थ पशुओं से अलग कर देवें एवं पशु चिकित्सक से सम्पर्क करें। –

– प्रो. ए. के. कटारिया, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

पेज शेष 3 का... खनिज तत्व

वाली बीमारियों से किस प्रकार बचाया जाये एवं उनका उत्पादन किस प्रकार बढ़ाया जाये। इसके लिए पशुपालक को चाहिए कि वे अपने पशुओं को बाजार में उपलब्ध विभिन्न मार्का के खनिज तत्व मिश्रण एवं साधारण नमक प्रत्येक नित्य आहार का एक प्रतिशत खिलाएं। इसके अलावा आजकल विभिन्न मार्का की खनिज/लवण ईंट भी उपलब्ध है, इसको पशु की ठाण के पास रख दिया जाता है। पशु इसे आवश्यकतानुसार चाटता रहता है। इससे भी सभी तत्वों की कमी पूरी हो जाती है और यह सस्ती भी पड़ती है। इससे पशुओं को खनिज तत्वों की कमी से उत्पन्न होने वाली बीमारियों से बचाकर उनका उत्पादन भी बढ़ाया जा सकता है। – प्रो. ए. पी. सिंह, प्रो. अनिल आहुजा, राजुवास (मो.09414139188)

पिछवाड़े में मुर्गीपालनः एक लाभदायक व्यवसाय

पिछवाड़ा मुर्गीपालन छोटे, सीमान्त भूमिहीन किसानों, मजदूरों एंव गरीब कृषक महिलाओं के लिए एक स्थायी आजीविका का स्त्रोत है। इसे कम लागत व थोड़े से साधनों से ही शुरू किया जा सकता है। व्यवसायिक मुर्गी पालन के द्वारा उत्पादित अंडे व मांस शहर के आस – पास के क्षेत्रों तक ही उपलब्ध होते हैं लेकिन पिछवाड़े मुर्गीपालन ग्रामीण क्षेत्रों में आश्वस्त आय के साथ बहुमूल्य प्रोटीन के रूप में पोषण प्रदान करता है। अतः यह पिछड़े और कमजोर लोगों के उत्थान के लिए आय का सरल साधन है। इसमें प्रायः 5 से 20 मुर्गियों के छोटे समूह को एक परिवार द्वारा पाला जाता हैं, जो घर एवं आस पास में गिरे हुये अनाज के दाने, रसोई अपशिष्ट, घास व कीड़े आदि का उपयोग कर कुशलता से मानव उपयोगी प्रोटीन जैसे अंडे और मांस के रूप में परिवर्तित करती है। इस प्रकार मुर्गियों के रख रखाव के लिए आवास एवं खाने–पीने पर कोई खास खर्चा नहीं आता है। इस मुर्गीपालन में पर्यावरण प्रदूषण भी व्यवसायिक मुर्गीपालन की तुलना में कम होता है।

मुर्गी की नस्ल का चुनावः देशी नस्लों की मुर्गियों की वृद्धि कम होने की वजह से देशी व विदेशी नस्लों से बनाई गयी संकर नस्लें इसके लिए ज्यादा लाभप्रद है। इसके लिए उपलब्ध संकर नस्लों में वनराजा, ग्रामप्रिया, कृष्णा–जे एंव ग्राम–लक्ष्मी प्रमुख हैं। ये नस्लें यहां के वातावरण व परिस्थितियों में अच्छा उत्पादन देने में सक्षम है।

प्रजनन का प्रबंधन : एक झुंड में एक ही मुर्गे से बार–बार प्रजनन नहीं करवाना चाहिए। इससे अन्तः प्रजनन की समस्या आती हैं और निषेचित अण्डों की संख्या एवं प्रस्फुटन प्रतिशत में कमी आती हैं और चूजों की मृत्यु दर भी बढ़ती है।

आहार की व्यवस्थाः अच्छा उत्पादन एंव अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए मुर्गीपालकों को आहार पर विशेष ध्यान देना चाहिए। किसी विशेष मौसम में

(शेष पेज 5 पर...)

सफलता की कहानी

तँवर का डेयरी फॉर्म बना एक नजीर

बीछवाल के प्रगतिशील किसान नरेन्द्रसिंह तंवर ने अपने फार्म पर आंवले का बगीचा, विविध फसल उत्पादन के साथ ही अब गत दो वर्ष से गौपालन को व्यवसाय के रूप में अपनाया है। युवा नवीनसिंह तंवर पुत्र नरेन्द्रसिंह तंवर ने शुरू में यहां 8–10 गायों से डेयरी का कारोबार शुरू किया। अब उनके पास 80 गायें हैं जिनसे 900 लीटर दूध प्रतिदिन का उत्पादन ले रहे हैं। तंवर ने अपने फार्म के 8 बीघे क्षेत्र में गौपालन के लिए आधुनिक तकनीक और यांत्रिकी का पूरा उपयोग करके शुद्ध और स्वास्थ्य वर्द्धक दुग्ध उत्पादन को अपना लक्ष्य बनाकर नई ऊंचाईयां प्रदान की हैं। इस डेयरी फार्म में पूरी तरह वैज्ञानिक तौर–तरीकों का इस्तेमाल किया जा रहा है। गायों को स्वच्छंद घूमने–फिरने के अलावा सूखे हरे चारे का आहार एक अलग टिन शैड में खिलाया जाता है, जहां गायों को तेज गर्मी से राहत के लिए मिस्ट से तापक्रम को नियंत्रित भी किया जा सकता है। गायों को आहार के दूसरे चरण में चाटा–बाटा खिलाने के लिए बने टिन शैड को इस प्रकार से तैयार करवाया गया है कि प्रत्येक गाय अपने लिए परोसे गये आहार को ही खा सकती है। तंवर ने दूध दुहने के लिए पूरी तरह आधुनिक तकनीक का उपयोग किया है। स्विस कम्पनी डिलावल द्वारा तैयार ''मिल्क पार्लर'' का उपयोग इस डेयरी की विशिष्टता है। एक ऊंचे टिन शैड के प्लेटफार्म पर दो भागों में बने अलग अलग खांचों में खड़ी 14 गायों को 20 मिनट की अल्प अवधि में मिल्किंग मशीन से दुहने का कार्य बखूबी किया जा रहा है। दूध सीधा ही कीटाणु केन में इकट्ठा कर विपणन के लिए परिवहन किया जाता है। नवीनसिंह का कहना है कि गायों के पौष्टिक आहार, स्वच्छता और स्वास्थ्य के प्रति पूरी तरह सचेत रहते हैं। वर्तमान में 55 से 60 गायों से औसतन प्रति गाय 20 से 30 किलो दूध प्रतिदिन प्राप्त करते है। अपने फॉर्म पर एक अच्छी नस्ल के सांड़ के साथ गर्भाधान के लिए कृत्रिम गर्भाधान तकनीक का भी उपयोग किया जाता है। संजीव शर्मा फॉर्म पर ''अजोला (एल्गी)'' नामक हरे चारे का उत्पादन अलग से तैयार 50 क्यारियों में करते हैं। इसमें मिट्टी, पानी, गोबर और गौमूत्र डालकर सुपर फूड ''अजोला'' हरे चारे की परतें उतार कर दो किलो प्रतिदिन खल, चूरी, चापड़, मक्का, ग्वार–कोरमा, मूंगफली की खल सहित 15 प्रकार के मिश्रण को आहार के रूप में देते हैं। इससे दूध में वसा की बढ़ोतरी के साथ ही उत्तम, स्वादिष्ट और शुद्ध दूध प्राप्त करते हैं। आधुनिक तकनीक के उपयोग, वैज्ञानिक रख–रखाव तथा पौष्टिक आहार से ही अधिक मुनाफा लिया जा सकता है।

सम्पर्क–नवीनसिंह एवं संजीवन शर्मा (मो. 9829217401)

मिल्क पार्लर

'अजोला' हरे चारे का उत्पादन

शेष पेज 4 का...मुर्गी पालन

एक ही प्रकार का अनाज देने के बजाय अनाजों को मिश्रित करके खिलाना चाहिए, इससे पक्षियों में आवश्यक तत्वों की कमी नहीं होती।

रोगों से बचाव व रोकथाम : मुर्गियों में होने वाले विभिन्न संक्रामक रोगों से बचाने के लिए समय – समय पर टीकाकरण आवश्यक है। रोगी पक्षियों को स्वस्थ पक्षियों से अलग रखना चाहिए। मुर्गी फार्म की मिट्टी व पानी पीने के बर्तनों का पानी समय समय पर बदलना चाहिए। एक मुर्गी फार्म से दूसरे फार्म के बीच दूरी रहनी चाहिए एवं आवास का आकार पर्याप्त रखें ताकि शुद्ध हवा मिल सके। आवास के आस–पास छायादार पेड़ लगाना चाहिए।

मुर्गियों के लिए सुरक्षा के उपायः मुर्गियों को हिंसक जानवरों के बचाने के लिए पर्याप्त व्यवस्था होनी चाहिए।

प्रो.उर्मिला पानू ,डॉ.मंजु नेहरा, (मो. 09001414330) राजुवास एवं
डॉ.लाखनपाल सिंह (पशु चिकित्सालय, लाड़नू

पेज 1 का शेष... उद्बोधन

नस्लों के संवर्द्धन और विकास का कार्य शुरू किया है। पांच स्वदेशी गौ नस्लों में से 3 नस्लों से प्रतिदिन 25 लीटर दूध उत्पादन प्राप्त किया गया है। विश्वविद्यालय में तैयार किए जा रहे सजीव पशु जैव–विविधिकरण म्यूजियम का अवलोकन करें जो शीघ्र ही पूरा होने वाला है। मेरे विचार से हमारा यह एक अनूठा कदम है जिसे विश्वविद्यालय के बीकानेर, जयपुर और वल्लभनगर(उदयपुर) परिसरों में भी स्थापित किया जा रहा है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा वेटरनरी विश्वविद्यालय के अन्तर्गत राज्य का पहला कृषि अनुसंधान केन्द्र हनुमानगढ़ जिले के नोहर में कार्यशील है। विश्वविद्यालय राज्य के हर जिले में वेटरनरी यूनिवर्सिटी टीचिंग एवं रिसर्च सेन्टर शुरू करने की योजना के अन्तर्गत इस वर्ष तक 10 जिलों में इनकी स्थापना का कार्य चालू है। बाकलिया (नागौर), सूरतगढ़ (गंगानगर), बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़) कुम्हेर (भरतपुर) व कोटा में केन्द्र शुरू हैं। प्रसार सेवाओं के विस्तार के लिए एस.एम.एस. सलाहकारी सेवा, आकाशवाणी से प्रत्येक सप्ताह में विशेषज्ञ वार्ताओं का प्रसारण और हिन्दी में "पशुपालन नए आयाम" मासिक पत्र, पशु आहार एवं चारा बुलेटिन व राजुवास न्यूज लेटर का प्रकाशन भी नियमित रूप से हो रहा है।

(प्रो. ए. के. गहलोत)

विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर शोध कार्य

भैंसों में शल्य विकारों का चिकित्सकीय अध्ययन

यह अध्ययन पशु शल्य चिकित्सा एवं विकिरण विज्ञान विभाग द्वारा राजस्थान के चिकित्सालयों में भर्ती एक वर्ष से अधिक भैंसों के 76 शल्य विकारों पर आयोजित किया गया। विविध अधिगृहित शल्य विकारों के मामले शरीर के विभिन्न अंगों में अर्थात सिर,गर्दन,छाती के कवच क्षेत्र में दर्ज किया गया। जिसमें टूटे हुए सींग के 6, सींग कर्क के 2, नेत्र गोलक के 4, जबड़े फ्रैक्चर के 2, कपाल फिस्टुला के 1, मुख गुहा में अर्बुध के 2, ग्रासनली घुटन के भैंसों में 5 मामले थे। वक्ष उदरीय के मामलों में मध्यपटीय हर्निया के 6, दर्दनाक रेटिकुलाइटिस के 2, रूमिनल इम्पाक्सन के 3, पेट और छाती के क्षेत्र में अर्बुध के 2 मामले पाये गये। अग्रपाद के त्रिज्या हड्डी के फ्रैक्चर का 1, करभिकास्थिक में फ्रैक्चर के 2 एवं कोहनी के जोड में फोड़ों के 2 मामले थे। इन मामलों का निदान इतिहास, शल्य परीक्षा एवं एक्स–रे द्वारा ली गई प्रति के द्वारा किया गया। जानवर की उम्र, लिंग, बीमार अवधि के बारे में मालिकों से जानकारी ली गई ताकि संभव कारण चोट घटने का समय निर्धारित किया जा सके। प्रत्येक मामले में क्लिनिकल जांच में शल्य विकारों का परीक्षण शामिल था। भैंसों की जांचें खड़ी अवस्था में या लेटी अवस्था में 2 प्रतिशत जायलाजिन @ 0.1–0.2 मिलीग्राम प्रति किलोभार या इसके बिना की गई। पश्चपाद के शल्य विकारों में समाविष्ट है 2 जांघ की हड्डी के फ्रैक्चर, 2 पिछले अंगों (नीचे के अंग) का पक्षाघात, 3 भैंसों में लंगड़ेपन का विकार, 11 पूंछ और पेरिनियल क्षेत्र के विकार, 2 टूटे पूंछों में विकार, 2 पूंछ अर्बुध, 2 पेरिनियल हर्निया, 5 चूची नाल व्रस्ण, 1 मूत्राशय मरोड़ में तथा 2 गुदा आगे के बाहर की ओर निकलना शामिल थे। **शोधकर्ता–आदित्य मिढ्ढा, समादेष्टा– डॉ. टी.के.गहलोत**

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान-नवम्बर, 2014

पशु रोग	पशु प्रकार	क्षेत्र
पी.पी.आर.	बकरी, भेड़	पाली, सिरोही
भेड़ों में क्लेमाइडिया से गर्भपात (Chlamydophila abortion/Enzootic abortion in ewe)	भेड़	बीकानेर
एम्फीस्टोमोसिस	गाय, भैंस,	कोटा, धौलपुर, उदयपुर, भरतपुर
फेसियोलोसिस	भैंस, गाय, बकरी, भेड़	भरतपुर, कोटा, धौलपुर, डूँगरपुर, हनुमानगढ़
हेमरेजिक सेप्टीसिमिया (ग लघोटूँ)	गाय, भैंस	जयपुर, भीलवाड़ा
मुँह खुरपका रोग (Foot & Mouth Disease)	गाय, भैंस,	धौलपुर, सवाई माधोपुर, जैसलमेर
बेबेसियोसिस (Babesiosis)	गाय, घोड़ा	धौलपुर, बीकानेर
सी.सी.पी.पी. (एक प्रकार का न्युमोनिया)	बकरी	धौलपुर
सालमोनेलोसिस	ऊँट	बीकानेर
छोटी माता (Pox)	ऊँट	बीकानेर

इसके अतिरिक्त मुर्गियों में गमबोरो रोग, दीर्घ श्वसन रोग, कोक्सीडिओसिस (खूनी दस्त), गोल एवं फीता–कृमि, कोराइजा, एविएन ल्यूकॉसिस काम्पलेक्स, कोलिबेसिलोसिस (सफेद दस्त) आदि रोगों की सम्भावना है। मुर्गी पालकों से निवेदन है कि इस संबंध में विस्तृत जानकारी विशेषज्ञों से प्राप्त कर लें।

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करे – डॉ. बी.के. बेनीवाल, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर एवं डॉ. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग एवं डॉ. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास, बीकानेर । फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183

मुख्य समाचार

नई दिल्ली में नालेज सिम्पोजियम का आयोजन

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा राजुवास टीम सम्मानित

बीकानेर। वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद व आर्युवेट लिमिटेड के तत्वावधान में आर्युवेट नालेज सिम्पोजियम का आयोजन 8–9 अक्टूबर को नई दिल्ली में किया गया। समापन समारोह पूर्व राष्ट्रपति माननीय डॉ. ए. पी.जे. अब्दुल कलाम के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा नई दिल्ली में पहली बार संगोष्ठी का आयोजन किया गया है। संगोष्ठी का दूसरा अंश ''इन्टिग्रेटिंग एग्रीकल्चर एंड लाइवस्टॉक फॉर सस्टैनबिलिटी– चैलेन्ज ऑफ क्लाइमेट'' विषय पर केन्द्रित संगोष्ठी का आयोजन पूसा के एन.ए.एस.सी. कॉम्पलेक्स, नई दिल्ली में हुआ। पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने कहा कि देश ने कृषि उत्पादन और प्रति व्यक्ति आय बढ़ाने में काफी प्रगति की है। दूध उत्पादन में हम विश्व में एक नम्बर पर हैं, मगर इन तमाम कामयाबियों के बीच हमें यह भी देखना चाहिए कि 1990 के दशक में हमने क्या सोचा था और उसे पाने में कितना अंतर रह गया है। विजन 2020 को हासिल करने के लिए छः साल से भी कम समय बचा है, इसलिए देश को प्राथमिकता के साथ इसे लेना चाहिए। इस लक्ष्य को पाने के लिए इससे जुड़े सभी हितधारकों का मनोबल बढ़ाना चाहिए। कुलपति प्रो. ए. के गहलोत ने कहा कि जलवायु परिवर्तन से घबराने व चिन्ता करने की जरूरत नहीं है बल्कि इस जलवायु परिवर्तन में पशुओं की उत्पादकता बढ़ाने के उपाय करने की जरूरत है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत व राजुवास टीम को सम्मानित किया। इस संगोष्ठी में वेटरनरी विश्वविद्यालय, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के कृषि व पशुपालन वैज्ञानिकों, किसानों व विद्यार्थियों की भागीदारी रही।

स्वदेशी गौवंश से टिकाऊ उत्पादन पर संवेदीकरण कार्यशाला

राष्ट्रीय गोकुल मिशन को लागू करके गौशालाओं का विकास किया जाएगा–

कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्री प्रभुलाल सैनी

बीकानेर। वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा स्वदेशी गौवंश से टिकाऊ उत्पादन पर एक दिवसीय संवेदीकरण कार्यशाला का आयोजन स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान,जयपुर में 7 अक्टूबर को किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री प्रभुलाल सैनी, मंत्री, कृषि, पशुपालन, डेयरी तथा मत्स्य विभाग, राजस्थान सरकार थे। पशुपालन मंत्री श्री सैनी ने कहा कि राज्य में राष्ट्रीय गोकुल मिशन योजना को लागू करके देशी गौवंश के संवर्द्धन और विकास कार्यों को तेजी से लागू किया जाएगा। राज्य में दूध उत्पादन बढ़ाने के सार्थक प्रयासों के तहत देशी गौवंश हमारे लिए महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा की गौशालाओं में पंचगव्य आधारित प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्रों को भी बढ़ावा दिया जाएगा। देशी गौवंश की महत्ता और उपयोगिता को पुर्नस्थापित करना हमारी प्राथमिकताओं में शामिल है। पशुपालन मंत्री ने संस्थान में नवनिर्मित उन्नत दुग्ध परीक्षण एवं अनुसंधान प्रयोगशाला का उद्घाटन किया। यह प्रयोगशाला दूध में कीटनाशक, दवा अवशेषों, एवं अन्य रोगजनक कारकों को उन्नत तकनीक द्वारा जांच–परखने में सक्षम है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने बताया कि राज्य में देशी गौवंश के संरक्षण द्वारा ही दुग्ध उत्पादन बढाया जा सकता है। वेटरनरी विश्वविद्यालय ने अपनी स्थापना के बाद से ही चुनिन्दा स्वदेशी गौवंशों राठी, थारपारकर, कांकरेज, गिर तथा साहीवाल नस्लों पर कार्य करना प्रारंभ कर दिया। विश्वविद्यालय को इन पांच स्वदेशी नस्लों के संरक्षण का गौरव प्राप्त है। राजस्थान ही एक ऐसा राज्य है जहां स्वदेशी गौवंश की जनसंख्या में वृद्धि हो रही है। स्वदेशी गौ नस्लों से दुग्ध उत्पादन में राजस्थान चौथे स्थान पर है। पूरे देश की 90 प्रतिशत स्वदेशी पशु नस्लों की संख्या राजस्थान में ही है। कुलपति ने बताया कि राज्य में उत्तम जर्म प्लाज्म की उपलब्धता को देखते हुए चारे और घास के उत्पादन की बहुत अधिक संभावनाएं है। बायोगैस के उपयोग, पंचगव्य की उपलब्धता, ऑरगेनिक कृषि आदि के कारण राजुवास को स्वदेशी नस्लों से उत्पादों को प्राप्त करने का प्लेटफार्म मिला है। विशिष्ट अतिथि श्री राजेन्द्र सिंह राजपुरोहित, राष्ट्रीय सह–संयोजक, राष्ट्रीय गौवंश विकास प्रकोष्ठ ने गौ सेवा को महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने गाय के दूध की बेहतर मार्केटिंग, पंचगव्य को बढावा, केन्द्रीय जेलों में गौशालाओं की स्थापना, गाय को राज्य प्राणी घोषित करने तथा राज्य में गौ आधारित ईको–ट्यूरिज्म को बढावा देने की आवश्यकता जताई। संगोष्ठी में डॉ. के.एम.एल. पाठक, उपमहानिदेशक (पशुविज्ञान), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली, राज्य के अतिरिक्त मुख्य सचिव श्री अशोक सम्पतराम, प्रमुख शासन सचिव श्री प्रीतम सिंह, शासन सचिव, पशुपालन श्री अभय कुमार, निदेशक पशुपालन विभाग डॉ. राजेश मान ने भी विचार व्यक्त किये।

ऊंटों व जुगाली वाले बड़े पशुओं की शल्य चिकित्सा पर अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनार सम्पन

भारत सहित 4 देशों के 475 पशु शल्य चिकित्सक व वैज्ञानिकगण हुए शामिल

बीकानेर। वेटरनरी विश्वविद्यालय में ऊंटों व जुगाली वाले बड़े पशुओं की सर्जरी में नए क्षितिज विषय पर तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनार 15 अक्टूबर से वेटरनरी कॉलेज के ऑडिटोरियम में शुरू हो गई। नवादा (बिहार) के सांसद एवं पूर्व पशुपालन मंत्री बिहार सरकार श्री गिरीराज सिंह और वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. (डॉ.) कर्नल ए.के. गहलोत ने दीप प्रज्वलित कर सेमीनार का विधिवत् उद्घाटन किया। इण्डियन सोसाइटी फॉर वेटरनरी सर्जरी की 38वीं कांग्रेस भी शुरू हो गई। सेमीनार में सऊदी अरब से डॉ. अहमद रमादान, डॉ. आदिलअल मुबारक, संयुक्त अरब अमीरात से डॉ. एलेक्स टिनसन, डॉ. कुलदीप कुहाड़, डॉ. सुहैल अनवर, सूडान से सुश्री रिहाब अब्दुल गासिर व बहरीन से डॉ. अब्दुल अहमद रहमान और देश के कोने–कोने से आए 475 वैज्ञानिक व पशु शल्य चिकित्सकों ने भाग लिया। मुख्य अतिथि रूप में सम्बोधित करते हुए सांसद श्री गिरीराज सिंह ने कहा कि बिना पशुओं के मानव जीवन के अस्तित्व पर सवाल खड़ा होता है। चिकित्सा विज्ञान में अनुसंधान और हमारी अर्थव्यवस्था में पशुओं का विशेष महत्व है। उन्होंने कहा कि देश की सत्तर प्रतिशत आबादी गांवों में रहती है। कृषि के साथ पशुपालन को जोड़ने से ही गांव, गरीब, और किसान का भला हो सकता है क्योंकि यही हमारी अर्थनीति का आधार है। श्री सिंह ने पशुओं की घटती संख्या को चिंताजनक बताते हुए पशुचिकित्सकों का आह्वान किया कि वे पशुओं की उपयोगिता और गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए कार्य करें। इसमें शल्य चिकित्सकों की अहम भूमिका है। पशुधन सम्पदा की समृद्धि के लिए आहार व चारा उत्पादन पर जोर देते हुए कहा कि पौष्टिक चारे से ही उत्पादन क्षमता बढ़ाई जा सकती है। सांसद ने देशी गौवंश, बकरी, पोल्ट्री से दूध, मांस, अण्डा उत्पादन को बढ़ाने के लिए पशु आधारित खेती–बाड़ी और मोरिंग जैसी घास के महत्व को रेखांकित किया। समारोह की अध्यक्षता करते हुए वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने कहा कि राजस्थान में पशुपालन व्यवसाय की प्रमुखता होने से विपरीत जलवायु परिस्थितियों, अकाल व कम वर्षा के बावजूद किसानों को मुश्किल समय से उबरने में मदद मिली है जबकि देश के कई प्रांतों में किसानों को भारी तंगी का सामना कराना पड़ा है। उन्होंने कहा कि गौवंश का पालन तथा जुगाली वाले छोटे पशु किसानों के लिए एक ए.टी.एम के समान उपयोगी है। सेमीनार के आयोजन सचिव व क्लिनिक्स के निदेशक प्रो. टी.के. गहलोत ने बताया कि तीन दिवसीय सेमीनार के 12 सत्रों में करीब 600 शोध पत्र प्रस्तुत किये गए।

निदेशक की कलम से...

पशुओं की उचित देखभाल जरूरी है

पशुधन को प्राकृतिक आपदाओं से बचाने तथा प्रतिकूल मौसम के अनुसार उनकी सुरक्षा के इंतजाम करना भी हमारी जिम्मेदारी है। अकाल, तेज हवाओं, बरसात और मौसम में होने वाले आकस्मिक परिवर्तन अथवा तेज गर्मी व सर्दी में पशुओं में संक्रमण और बीमारियां फैलने का खतरा बढ़ जाता है। इनके दुष्प्रभावों से पशु उत्पादन भी कम हो जाता है और पशुओं के बीमार हो जाने पर पशुपालकों को मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। पशुओं में होने वाले संभावित रोगों के बारे में पूर्वानुमान बुलेटिन प्रत्येक माह ''पशुपालन नए आयाम'' के अंक में प्रकाशित किया जाता है। उसके अनुसार पशुओं की सुरक्षा के लिए टीकाकरण करवाना जरूरी है। जरूरत के अनुसार पशुचिकित्सक की सलाह से माकूल उपचार करवाने में कोताही नहीं करनी चाहिए। वेटरनरी विश्वविद्यालय के एपेक्स सेन्टर द्वारा पशुओं में होने वाली आकस्मिक बीमारियों की जांच पड़ताल और उचित उपचार की सलाहकारी सेवाएं पूरे राज्य में उपलब्ध करवाई जा रही हैं। विश्वविद्यालय में ही स्थापित पशु आपदा प्रबंधन और तकनीक केन्द्र द्वारा पशुओं को आपदा के समय में प्रंबधन उपाय और प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जाते हैं। पशुधन चारा संसाधन प्रबंधन एवं तकनीक केन्द्र द्वारा पशुओं में उचित पोषण से उत्पादकता बढ़ाने की दिशा में भी सेवाएँ सुलभ है। ये सब कुछ राज्य के पशुपालकों के हित में किया जा रहा है। विश्वविद्यालय के वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, वल्लभनगर (उदयपुर) तथा जयपुर के स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा एवं अनुसंधान केन्द्र में भी विशिष्ट चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध हैं। पशुपालक अपनी सुविधा के अनुसार विशेषज्ञ चिकित्सकों से उपचार और सलाह ले सकते हैं। वेटरनरी महाविद्यालयों के वेटरनरी टीचिंग एण्ड क्लिनिकल कॉम्पलेक्स में अनुभवी और सिद्धहस्त चिकित्सकों की सेवाएं ली जा सकती हैं।

प्रो. (डॉ.) त्रिभुवन शर्मा, प्रसार शिक्षा निदेशक

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित धीणे री बात्यां के अन्तर्गत नवम्बर, 2014 में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है।

क्र.सं.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	प्रो.जी.एन.पुरोहित (09414325045) पशुरोग एवं प्रसूति विभाग	पशुओं में ब्याहने के बाद में समस्या और समाधान	06.11.2014
2	प्रो. त्रिभुवन शर्मा निदेशक पीएमई (09414264997)	पशुओं की उत्पादकता पर पोषण का प्रभाव	13.11.2014
3	प्रो शरतचन्द्र मेहता, प्रधान वैज्ञानिक राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, (09414416425)	राजस्थान प्रदेश की पशु प्रजनन नीतियां	20.11.2014
4	प्रो. संजिता शर्मा पीजीआईवीईआर, जयपुर (09649551451)	डेयरी व्यवसाय में पशुओं का प्रबंधन	27.11.2014

पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि निर्धारित समय पर प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठायें।

मुस्कान !

संपादक
प्रो. त्रिभुवन शर्मा
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क)
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पशु पालन नए आयाम
मासिक अंक : नवम्बर, 2014

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजूवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. त्रिभुवन शर्मा द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन विजय भवन पैलेस राजूवास बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. त्रिभुवन शर्मा